● गाओ और समझो :

७. नदी कंधे पर

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव

KKE7XP

जन्म : ४ अगस्त १९४४, धरमपुरा, दमोह (मध्यप्रदेश) **रचनाएँ :** बुंदेली लघुकथाएँ, लोकगीत, दैनिक भास्कर, नवभारत में बालगीत आदि । **परिचय :** आप विगत दो दशकों से कहानी, कविताएँ, व्यंग्य, लघुकथाएँ, गजल आदि लिखते हैं ।

प्रस्तुत कविता में काल्पनिक प्रतीकों के द्‌वारा नदी के प्रति बाल मनोभावों को व्यक्त किया हैं ।

अगर हमारे बस में होता,
नदी उठाकर घर ले आते ।
अपने घर के ठीक सामने,
उसको हम हर रोज बहाते ।
कूद-कूदकर, उछल-उछलकर,
हम मित्रों के साथ नहाते ।

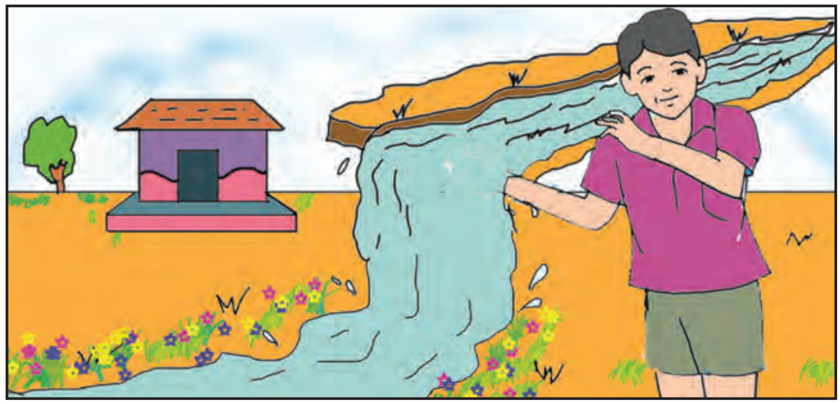

कभी तैरते कभी डूबते,
इतराते गाते मस्ताते ।
नदी आ गई चलो नहाने,
आमंत्रित सबको करवाते ।
सभी उपस्थित भद्र जनों का,
नदिया से परिचय करवाते ।
अगर हमारे मन में आता,
झटपट नदी पार कर जाते ।

खड़े-खड़े उस पार नदी के,
मम्मी-मम्मी हम चिल्लाते ।
शाम ढले फिर नदी उठाकर,
अपने कंधे पर रखवाते ।
लाए जहाँ से थे हम उसको,
जाकर उसे वहीं रख आते ।

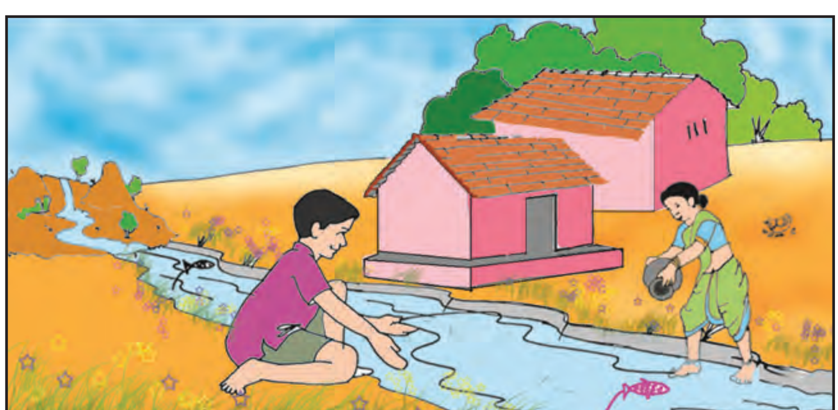

❑ विद्‌यार्थियों से एकल एवं सामूहिक कविता पाठ कराएँ । प्रश्नोत्तर के माध्यम से नदी को अपने कंधों पर ले आने की कल्पना को स्पष्ट करें । उन्हें बाल जगत से संबंधित अन्य किसी कल्पना के प्रति बाल मनोभाव व्यक्त करके प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करें ।